वार्षिक पत्रिका का १८ वाँ अंक, वर्ष २०२०

संत अलोशियस (स्वायत्त) महाविद्यालय
मंगलूरु

प्रेरणा - २०२०

सम्पादक समिति

हिन्दी अध्यापक तथा संघ के सचिव

अध्यापकः डा. मुकुंद प्रभु, श्री एम.ए नदाफ, श्रीमति संध्या यू सिर्सीकर, सुश्री रोयसी रेखा ब्राग्स, सुश्री मंजुला डी, सुश्री कीर्तना सी शेटटी ।
संपादक समितिः मेलिशा स्विडल, डियोन कर्डोजा, व्यालरी वाज़,श्रेया.टि,शीबा,जैसन ।
संघ के सचिवः श्री. मोहम्मद इसमाइल सिनान, लक्ष्मी ।

संपादकीय

पत्रिका का उद्देश छात्र-छात्राओं में सृजन-प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना है । 'प्रेरणा' पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है । यह पत्रिका छात्रों में छिपि ज्ञान-शक्ति को उजागर करने का प्रयास करती है ।

'वही ज्ञान काम आता है, जिसका अवसान अनुभव में होता है ।' बिना अनुभव का ज्ञान अधूरा होता है । जैसे बीज मिटकर वृक्ष बनता है, ठीक उसी तरह ज्ञान का अवसान अनुभव में होने के उपरांत ही काम आता है । एक उदाहरण –

सामान्यतः उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के बाद अधिकतर युवक काम की तलाश में निकलते हैं । एक स्वाभिमानी युवक बार एंड रेस्तारा में पहुँचकर काम पूछा तो उसको अनुभव के बारे में पूछा जाता है । तभी वह युवक कहता है कि 'अनुभव नहीं है' । बिना अनुभव के काम पर लेना मुश्किल है कहकर उसको कम वेतन में काम दिया जाता है । इमानदारी से वह वेटर का काम करने लगता है । एक शराबी उधर आता है और पापड माँगता है तो युवक लाकर दे देता है । ग्राहक मालिक को बुलाकर दिखाते हुए कहता है – "आपके यहाँ ऐसा पापड मिलता है ? इसे कैसे खाया जा सकता है ?" मालिक युवक को बुलाकर कहता है कि – "इस पापड को ऐसे कैसे खाया जा सकता है ? जाओ, इसे अच्छी तरह से भुनकर देना ।"

इसी तरह हमारे छात्र अपने ज्ञान को पीस कर अनुभव के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं । सुधी पाठकों से निवेदन है कि छात्रों के कच्छे अनुभवों की कमियों को क्षमाकर प्रोत्साहन करें ।

'प्रेरणा' पत्रिका के प्रकाशन में अनेकों का सहयोग मिला है । उनके प्रति श्रद्धा सुमन समर्पण करना मेरा कर्तव्य है । 'प्रेरणा' पत्रिका के लिए विभिन्न विषयों पर लेख लिखकर पत्रिका की गरिमा बनाए रखनेवाले सभी नवलेखकों को साधुवाद देता हूँ । पत्रिका का टंकण कार्य और प्रकाशन में मदद करने वाली संपादक समिति के सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ । छात्रों के लेखन को सुधार कर प्रकाशन के लिए सहयोग के साथ शुभ आशीर्वाद देनेवाले प्राचार्य, विभागाध्यक्ष तथा चारों सहकर्मी अध्यापिकाओं को धन्यवाद देता हूँ ।

धन्यवाद ।

श्री महबूबअली अ. नदाफ

Principal's Message

Department of Hindi at St Aloysius College (Autonomous) has shown excellence in academics and all other co-curricular activities. Like the name 'Prerana', given to the magazine, the students draw inspiration from it and showcase all their activities held in the academic year 2019-20. 'Prerana' provides a platform to exhibit their talents, their inner aspirations and vision. It's a medium through which the students communicate their deep desire and longings.

We are in a consumeristic and digital world which is a challenge to our traditions and long cherished culture. We need to be deeply rooted in our own culture. Language plays a major role in nourishing a particular culture. In this present scenario our Hindi students continue to give expressions to their thoughts and inner longings through 'Prerana'. The members of Hindi faculty encourage the students to read and express their thoughts through writing.

Many of our students do not even glance through daily newspapers leave alone reading a good literature. These habits have to be cultivated and interest must be generated. Creativity and imagination is required to produce a good literature. One has to enjoy both reading and then put their ideas through creative writing. This is precisely the purpose of magazine like 'Prerana'. I congratulate the students and the faculty of Hindi department for their creative and lively presentation.

Rev. Fr. Dr. Praveen Martis SJ

Principal, St Aloysius College (Autonomous)

विभागाध्यक्ष का संदेश

आधुनिक जनसंचार माध्यम एवं मोबाइल फोनों के बोलबाले में पढ़नेवाले एवं लिखनेवालों की संख्या दिन भर दिन घटती जा रही है । मनुष्य मनुष्य के बीच की संवेदना घटते जा रही है जिससे मानवीय मूल्यों का ह्रास होने के साथ साथ मानसिक तनाव पारिवारिक विघटन एवं खिन्नता के कारणों से युवा पीढ़ी में आत्महत्या की संख्या भी बढ़ रही है । साहित्य कला एवं नृत्य आदि मनुष्य को संवेदनशील बनाने के साथ साथ उनमें जीवनोत्साह भी बढ़ाते हैं । जीवन की सही दशा एवं दिशा प्राप्त करने के लिए, जीवन को सुखमय बनाने के लिए ज्ञान की भी नितांत आवश्यकता है ।

आज के वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में ज्ञानार्जन के अनेकों साधन उपलब्ध हैं। पत्र पत्रिकाएँ पुराने जमाने से यह काम करते आयी हैं । हमारी प्रेरणा वार्षिक पत्रिका ज्ञान भण्डार का विस्तार करने के साथ साथ उदयोन्मुख साहित्यकारो को अपनी कलम अजमाने का मौका प्रदान करती है । हमारे विद्यार्थियों में छुपी हुई सुप्त प्रतिभा एवं विचारों को प्रकाशित करने का एक मौका उपलब्ध कराती है । अपनी भावना एवं अनुभवों को कविता कहानी या चुटकुलों के माध्यम से लिपिबद्ध करने का प्रयास हमारे नौसिखिए लेखक करते हैं । आगे चलकर यह प्रतिभाएँ निखर उठ सकती है देश विदेश में नाम बना सकती हैं। इसलिए हम सब मिलकर उनको प्रोत्साहित करके उनका भविष्य उज्ज्वल बनाएँगे ।

डॉ. मुकुन्द प्रभु
विभागाध्यक्ष

अध्यक्षा का संदेश

पूरे राष्ट्र की आशा है, हिन्दी अपनी भाषा है,
जात-पात के बंधन को तोडें, हिन्दी सारे देश को जोडें ।

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है । हिन्दी भाषा को देवनागरी लिपि में भारत की कार्यकारी और राजभाषा का दर्जा आधिकारिक रूप में दिया गया है । भाषा समृद्धि को ध्यान में रखते हुए संत अलोशियस महाविद्यालय का हिन्दी विभाग 'प्रेरणा' पत्रिका का उद्घाटन हर साल करता आया है । जिसमें हिन्दी विभाग के छात्र-छात्राएँ अपने प्रेरणादायी लेख द्वारा साहित्य को जोड़ने में हमेशा तत्पर रहते हैं । हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है, जो अनजान लोगों में दोस्ताना बढ़ाती है ।

'प्रेरणा पर्व' हिन्दी विभाग का विशेष अंग है । प्रेरणा 2020 सबको शुभकामनाएँ ।
धन्यवाद ।

रोयसी रेखा ब्राग्स
हिन्दी संघ की अध्यक्षा

अध्यापिका का संदेश

हिन्दी है हम वतन से…

हिन्दी पूरी दुनिया में सबसे अधिक बोली जानेवाली मूल भाषा के रूप में सुप्रसिद्ध है । हिन्दी हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तानियों की पहचान भी है । आज हमारी प्रेरणादायी 'प्रेरणा' पत्रिका ने यह साबित किया है कि हिन्दी तकनीकी भाषा के साथ-साथ लचीली साहित्यिक भाषा भी है ।

हमारे हिन्दी विद्यार्थियों ने अपने साहित्यिक ज्ञान को शब्दों द्वारा खूबसूरती से बयान किया है । आज हिन्दी पढ़नेवालों की संख्या दिन-ब-दिन बढती जा रही है, वैसे ही हिन्दी का प्रचार प्रसार भी ज़ोरो-शोरों से जारी है ।

हिन्दी संघ एक ऐसा मिलन है जहाँ पर किसी भी दायरों की सीमा नहीं है । विद्यार्थी अब तक बहुत ही खुशमिज़ाज से अपनी पहचान बनाते आ रहे हैं । 'प्रेरणा' पत्रिका या 'प्रेरणा' अंतरमहाविद्यालय प्रतियोगिता सदियों से अपनी हिन्दी धारा से एक दूसरे को जोड़ने का काम करती आयी है । आज 'प्रेरणा' कार्यक्रम विद्यार्थियों के अद्भुत कला प्रदर्शन का महामंच बना है । जिले के अनेकों विद्यार्थियों इस प्रतियोगिता में दिल से भाग लेकर अपनी छाप छोड़ जाते हैं । 'प्रेरणा' सबको प्रेरित करनेवाली प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया में अनेक विद्यार्थी और अध्यापकों की मेहनत जुड़ी हुई है। इस मेहनत का फल 'प्रेरणा' है । इस महामंच को वंदित करते हुए सबको नये साल की शुभकामना और उम्मीद करती हूँ कि यह साल 2020 सबको वृद्धि और फलदायक रहे ।

इस कार्य में प्रत्यक्ष-परोक्ष जितनी भी मुझे सहायता मिली है उन सबको में हृदय से आभारी हूँ ।

जितना कठिन संघर्ष होगा,

जीत उतनी ही शानदार होगी ।

धन्यवाद ।

संध्या यू. सिर्सीकर

हिन्दी अध्यापिका

अध्यापिका का संदेश

"हिन्दी सिर्फ हमारी भाषा ही नहीं, हमारी पहचान है ।"

हिन्दी आज दुनिया की सबसे बड़ी आबादी द्वारा बोली और समझनेवाली भाषा है ।

मुझे यह गर्व है कि संत अलोशियस कालेज के हिन्दी विभाग में पढ़ाने का सुअवसर मेरा हुआ है । हिन्दी को भाषा की जननी, साहित्य की गरिमा, जन-जन की भाषा और राष्ट्र भाषा भी कहते हैं । 'प्रेरणा पर्व' अन्तर कॉलेज का पर्व है । यह पर्व छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को प्रदर्शित करने की माध्यम बन गयी है । प्रेरणा पत्रिका इसी पर्व का दूसरा अंग है जो छात्रों की साहित्यिक दुनिया को पहचान देती है । हिन्दी विभाग हमेशा विद्यार्थियों का साथ दे रहा है । यह परिश्रम विद्यार्थियों का भविष्य उज्जवल करे, हिन्दी भाषा का विकास हो, मेरा आशय है ।

मंजुला डी.

हिन्दी अध्यापिका

प्रसिद्धयोद्धा

मुझे संत एलॉशियस कॉलेज में काम करने का मौका मिला यही मेरा सौभाग्य है । यह संस्था बहुत पुरानी है और प्रसिद्ध भी । इस संस्था में सब को हर तरह की प्रेरणा मिलती रहती है । इस संस्था के नाम का अर्थ ही है 'प्रसिद्धयोद्धा' । उसी तरह यहां से प्रेरणा लेकर जाने वाले हर एक इन्सान भी प्रसिद्ध बनेगा ।

इस कॉलेज में हिन्दी भाषा को महत्व देने का कार्य हो रहा है । इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ । मेरी कामना है कि इस संस्था का हर एक छात्र भी प्रसिद्धयोद्धा बने ।

'प्रेरणा' पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों को मेरी तरफ से अभिनंदन कहती हूँ ।

इस कॉलेज में पढ़नेवाले सभी छात्राओं को मैं यह कहना चाहती हूँ कि "नित्य कुछ नया करने की उम्मीद रखिए और इस संस्था से प्रेरणा लेकर प्रसिद्ध होते रहिए ।"

कीर्तना सी. शेट्टी

हिन्दी अध्यापिका

'प्रेरणा' पत्रिका के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में न केवल साहित्यिक रुचि जागृत करना है, बल्कि हिन्दी के प्रचार, प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देना भी है । हिन्दी के लिए अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए हमें निरंतर प्रयास करने होंगे ताकि हिन्दी के लक्ष्य को पूरा कर सकें ।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से हम एक हैं । इस देश को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति सिर्फ हिन्दी में है । इसका एक कारण यह भी है कि देवनागरी लिपि, सभी लिपियों में सरल मानी जाती है । भारत की आठ भाषाओं की लिपि देवनागरी ही है । इसीलिए हिन्दी राजभाषा के स्थान पर विराजमान है ।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हमने हिन्दी को केवल 'प्रेरणा' पत्रिका तक ही सीमित नहीं रखा है बल्कि 'प्रेरणा' अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता को जन-मन तक पहुँचाने की कोशिश भी कर रहे हैं । हर साल यह कार्यक्रम सफल रहा है । इस कार्यक्रम में अनेक महाविद्यालय भाग लेकर अपनी छाप छोडते हैं ।

मैं तहे दिल से मेरे मित्रों को धन्यवाद देना चाहूँगा। हमे मार्गदर्शन कर के हमारे हर कदम में साथ रहने वाले अध्यापकों को भी धन्यवाद देता हूँ ।

मोहम्मद सिनान
हिन्दी संघ के सचिव

प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो

रोहिणी एस.
द्वितीय बी.कॉम.

भाषा शिक्षण का क्षेत्र अनुप्रायोगिक है । इसमें विभिन्न विषयों के शिक्षण के लिए जिस भाषा का प्रयोग होता है, वह शिक्षा का माध्यम कहलाती है । शिक्षा का माध्यम अपनी मातृ भाषा भी हो सकती है और दूसरी भाषा भी । लेकिन मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने का मुख्य उद्देश्य अपने समाज और देश में संप्रेषण प्रक्रिया को शुद्ध, व्यापक और सशक्त बनाना होता है ।

भारत में मातृभाषा को विषय के रूप में अधिकतर पढ़ाया जाता है । किंतु इसके लगभग सभी राज्यों में, एकाध छोड़कर माध्यम की भाषा के रूप में अपनी मातृभाषा का प्रयोग नहीं हो रहा है । विदेशों में अंग्रेज़ी बच्चे को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है । लेकिन शिक्षा के माध्यम के रूप में वहाँ अपनी भाषा का ही इस्तेमाल होता है । इससे वे नए ज्ञान-विज्ञान तथा साहित्य का सृजन करते हैं और इसी कारण वहाँ सामान्य पुरस्कार से लेकर नोबल पुरस्कार विजेता तक के मनीषी जन्म लेते हैं । भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हमने न तो अपनी शिक्षा पद्धति पर गंभीरता से विचार किया और न ही शिक्षा के माध्यम की ओर ध्यान दिया । छात्र से विषय की प्रवीणता और कुशलता के विकास की जो अपेक्षा की जाती है, अंग्रेज़ के शिक्षा के माध्यम होने से उसका अभाव ही मिलता है । विषय को न समझ पाने के कारण छात्र को या तो विषय को रटना पड़ता है या परीक्षा में नकल करना पड़ता है । अगर वह विषय को ग्रहण भी कर ले, फिर भी उसको अंग्रेज़ी में अभिव्यक्त नहीं कर पाता ।

विदेशी खाद पर हम पनप नहीं सकते । मैं विदेशी भाषाओं के खजाने को अपनी भाषाओं के माध्यम से लेना चाहती हूँ ।

मेरी आज़ादी

विकास कुमार
द्वितीय बी.एस्सी.

जंजीरों से बँधी हुई में
प्यारी सी एक चिडियाँ हूँ
माँ भारती की गोद में खेली
अपनी जन्मधात्री की दुलारी हूँ ।

आज़ादी में पल बढकर भी
गुलामी मेरी जिन्दगानी है
ए देशवासियों धिक्कार तुमको
जो मुझपर जुल्म कराते हो ।

बेटों को तों सिर पे बिठाकर
बेटियों पर रोब जमाते हों
क्यों कराते भ्रूण हत्या
जब उसकी भी तो जिन्दगानी है ।
क्यों करते हो कत्ल बेटी की गर्भ में
और बेटों को जग दर्शन कराते हो
बस करो अब सहन न होता
एक बेटी की बर्बादी ।
जीने दो अब मुझको तुम सब
आखिर मेरी भी तो जिन्दगागी है
काँटों से भरा राह मेरा
दुःखद भरी ये पीड़ा है ।
दहेज के नाम पे पीड़ा सहना
यही मेरा एक जरिया है
कौन करेगा उद्धार मेरा
अल्लाह, रहिम, मसीह या गुरुद्वारा ।
कब बालेगा समाज मेरा
सोच, तरकीब और आडंबरों का डेरा
कब मिलेगी आजादी मुझको
अब होता न सहन मेरा ।

देशभक्ति

स्वस्तिका जी. आर.
प्रथम बी.एस्सी.

देशभक्ति का तात्पर्य अपने देश के साथ प्रेम करना है । यह मानव के हृदय में जलने वाली ईश्वरीय ज्वाला है जो अपनी जन्म भूमि को अन्य सभी से अधिक प्यार करने की शिक्षा देती है ।

देशभक्ति अपने देश के लिए बडे से बडे त्याग करने के लिए आतुर रहते हैं और अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान होने के लिए सदा तैयार रहते हैं । कूपर ने कहा है "इंगलैंड में कितनी भी कमियाँ क्यों न हो, मैं फ़िर भी इससे प्यार करता हूँ।"

देशभक्ति एक श्रेष्ठ गुण है । एक संस्कृत उक्ति में कहा गया है कि माँ और मातृभूमि तो स्वर्ग से भी बढकर है । अपने देश के दुःखो और कष्टों में हमें इसके साथ खडा होने, इसके लिए कार्य करने और यदि आवश्यकता पडे तो इसके लिए अपना जीवन अर्पण करने के लिए तैयार रहना चाहिए । क्या इसी देश ने अपनी गोदि में हमें खिलाया नहीं, अपनी विपुलता से हमारा पोषण और अपनी हार्दिकता से हमें सुरक्षा प्रदान नहीं की? अपने देश से प्यार न करना अकृतज्ञता के सिवाय कुछ नहीं।

मेरा बीता हुआ कल

स्टीवन

प्रथम बी.एस्सी.

"कल के बिना आज नहीं, आज के बिना अगला दिन (कल) नहीं ।" समय के इस चक्रव्यूह में हम जो कल थे, वही आज और हमेशा रहेंगे । 'समय' संसार की कुछ ऐसी बात है, जिस पर बड़े से बड़े समर्थ व्यक्ति का भी कोई वश नहीं चलता । मेरे बीते कल में ही था मेरा अस्तित्व और उसी की वजह से मेरी पहचान आज अलग है ।

मेरे जीवन में मैंने 'कल' शब्द का महत्व तब जाना जब मुझे यह अहसास हुआ कि भले ही कल हमारे वश में ना हो लेकिन जो अच्छे कर्म हमने किये थे उनका परिणाम जरूर आज फल दे रहा है ।

बचपन से लेकर आज तक मैं अपने माता-पिता, दादा-दादी के साथ रहते आया हूँ । इससे मेरे वास्तव में यह बात है कि परिवार का संबंध अमूल्य और अटूट है । मेरे दादाजी मुझसे कहते थे, "कल का दिन बीत गया, लेकिन कल की यादें नहीं" ।

यादों का सिलसिला बचपन से मेरे मस्तिष्क में बसा हुआ है । वो स्कूल के दिन, बचकानी हरकते, अध्यापकों की डाँट, खेल-कूद आदि से वह यादें और भी ताजी हो जाती हैं ।

समाज में कल के जीवन से एक व्यक्ति को कैसे मर्यादा मिलती है उसे मैंने मेरे दादाजी से सीखा, जो पोस्टमास्टर थे । मेरा परिवार भी बहुत सहनशील, सुदृढ़ और प्यारा था । मेरे दोस्त और सहपाठी मेरे बहुत ही खरीब थे । उनके बिना मेरी शिक्षा के साल कुछ नहीं । इस तरह मेरी जिन्दगी में इन लोगों का अधिक प्रभाव रहा ।

"कल के लिए जो रोया वह हार गया ! लेकिन कल के लिए जो आज रोया वह मजबूत बन गया ।" दरअसल हम कहते हैं कि बीता हुआ समय याद करके पचताना शून्य है । लेकिन क्या वह समय भूल पाना इतना आसान है ? जी नहीं । यादों को वह बरसात रहती है ।

इसलिए मेरी जिन्दगी का आवश्यक भाग मेरे कल को ही मानता हूँ । कल कोई बदल नहीं सकता, आज कोई फिर जी नहीं सकता, परसो कोई अब देख नहीं सकता । मैं

मेरे जीवन के लिए भगवान को आभारी मानता हूँ । यह 'कल' को लेकर मेरा एक छोटा-संदेश है कि "कल के सहारे न जीना हमेशा दोस्त, अगर कल बुरा था, तो आज अच्छा कर संतुष्ट रहना कि यह अच्छा कल रहेगा ।"

प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन है – स्वामी विवेकानन्द

रोहिणी एस.

द्वितीय बी.कॉम.

प्रेम विस्तार है, यह प्रेम होता क्या है ? पहले हमें इसका अर्थ क्या है और स्वामी विवेकानन्द ने ऐसा क्यों कहा है कि यह प्रेम विस्तार होता है । प्रेम यह एक ऐसी चीज़ है जिसे न खरीदा जा सकता है न किसी से माँगी जा सकती है, यह अपने आपसे शुरु होती और आप-ही में खत्म । पहले हम स्वयं से प्रेम करेंगे तो दूसरों को प्यार दे पाएँगे, खुद से नफरत करोगे तो दूसरों को भी गलत समझोगे । कबीर ने भी अपने दोहों में कहा है जहाँ प्यार है वहाँ कभी नफ़रत नहीं होती, और बदले में हमें प्यार ही मिलेगा ।

पर कभी-कभी स्वार्थ भी जरूरी है, जैसे फिल्मों में दिखाया जाता है कि एक लड़का और लड़की प्यार करते हैं और जब सभी परिवार उनके खिलाफ़ होते हैं तो वह सभी लोगों से लड़ते हैं या तो भाग जाते हैं । इसमें यह हमें दिखता है कि प्यार जब किसी से होता है तो उस प्यार को पाने के लिए सबके खिलाफ़ जाना पड़ता है । इसमें स्वार्थता दिखाई पड़ती है । यह फिल्मों में भी कभी-कभी कुछ ऐसा सिखाती है कि जहाँ प्यार भी हो और साथ-ही-साथ स्वार्थ भी, क्योंकि कुछ पाने के लिए कभी स्वार्थी भी होना पड़ता है । हर जगह सिर्फ प्यार बाँटाने से तुम किसी के लिए अच्छा बनोगे और किसी के नज़रों में बुरा, जरूरी नहीं सभी के नज़रों में अच्छा हो ।

उदाहरण के लिए जैसे कोई झगड़ा हो रहा है , और तुम उधर प्यार से अच्छे से किसी को समझाने पर भी नहीं समझे तो उधर अपने हक को पाने के लिए थोड़ा स्वार्थी होना पड़ता है । किसी और की गलती पर हम क्यों फँसे ? यह प्यार तो है, पर प्यार दिखाने के लिए खुद को गलत टहराना नहीं होता । यह बात सच है कि जहाँ हम स्वार्थी हैं, वहाँ हम कभी-कभी अपने रिश्ते खो देते हैं । ऐसे लोगों में नफ़रत ज्यादा बनी रहती

है, तुम कितना भी प्यार दिखाओं । हमें अपने-आप को उदास नहीं करना चाहिए, क्योंकि किसी न किसी दिन उन्हें भी हमारे प्यार का अहसास होगा, फिर वह लोग पचताएंगे । हमें अपने गुस्से को अपने काबू में रखना चाहिए, लेकिन वह भी कोई सीमित समस्या या कुछ हद तक ।

हमारे माता-पिता का ही प्यार देख लो, वह हमारे प्रति भरपूर प्यार दिखाते हैं, लेकिन उसी प्यार से हमारे जिद को पूरा करने के लिए दूसरों के सामने थोड़ा स्वार्थी बन जाते हैं । वे चाहते हुए भी, हमारी भलाई के लिए हमारी खुशी के लिए दूसरों से लड़ जाते हैं । उनका प्यार किसी भी चीज़ों से तोलने या तुलना करने पर अंतर जमीन-आसमान का होता है । स्वार्थ तो इन्सान के मन में, दिमाग में होता है, वह अपने-आप पनपता है । हमारा काम होता है कि उस स्वार्थ को अपने काबू में रखे और प्यार वहीं बाँटे जहाँ जरूरत हो और स्वार्थी भी तभी बनो जहाँ ज्यादा जरूरत हो ।

बारिश का मौसम

ल्यान्सी रोड्रिगस
प्रथम बी.कॉम.

बारिश जब आती है
ढेरों खुशियाँ लाती है ।
धुलों का उड़ना बंद कर जाती है
मिट्टी की भीनी सुगंध फैलाती है ।
बारिश जब आती है
ढेरों खुशिया लाती है
भीषण गरमी से बचाती है
शीतलता हमें दे जाती है ।
बारिश जब आती है
ढेरों खुशिया लाती है
चारों ओर हरियाली फैलाती है
नदियों का पानी बढ़ाती है ।

विज्ञापन के गुण और अवगुण

शरण्या.

द्वितीय बी.कॉम.

प्रस्तावना

विज्ञापन एक ऐसा माध्यम या साधन है जिसके द्वारा हम किसी भी वस्तु, व्यक्ति, व्यापार, पदार्थ आदि का प्रचार कर सकते हैं ।

विज्ञापन के गुण

विज्ञापन को हम एक वरदान के रूप में भी अपने जीवन में ले सकते हैं । बहुत से ऐसे प्रोडक्ट या सामग्री होती है जो मनुष्य के लिए बहुत ही लाभदायक होती है । हम किसी दवाई की बात कर सकते हैं या किसी आयुर्वेदिक दवाई की बात कर सकते हैं या किसी भी तरह के चेहरे से लगाई जाने वाली क्रीम, बालों से लगाने वाला ऑइल जिसका विज्ञापन होता है । वाकई में ये हमारे लिए लाभदायक हो सकते हैं । इसके बारे में हमें विज्ञापनों के द्वारा पता लगता है । वह हमारे जीवन को सुरक्षित रख सकता है । वास्तव में विज्ञापन हर किसी के लिए फायदेमंद हो सकता है, अगर हम हमारी सोच और विवेक से काम ले तो घर में उपयोग की जाने वाली खाद्य सामग्री, सुंदरता प्रसाधन वाली सामग्री भी हम विज्ञापन के जरिए जान ससते हैं । नवजात शिशुओं की सुरक्षा के लिए बहुत सी क्रीम और उपयोगी खाद्य सामग्री का विज्ञापन होता है । इसके बारे में जानकर माँ-बाप उन चीजों को खरीदते हैं और अपने बच्चों को विशेष रूप से लाभ दिलाते हैं ।

विज्ञापन के अवगुण

बहुत सारे लोग ऐसी सामग्रियों के लुभावने विज्ञापन देखकर उनको खरीद लेते हैं और अपने पैसों के साथ जिन्दगी भी बर्बार्द करते हैं । हमें चाहिए कि इस तरह के लुभावने विज्ञापनों से बचकर विज्ञापन को एक अभिशाप न बनने दें । कई कंपनियाँ ऐसी भी होती हैं जो अपने प्रोडक्ट सस्ते में बनाकर ग्राहकों को लुभावना देकर महंगे में बेचती हैं । ग्राहकों को ठगने का काम करती हैं । वह दवाइयाँ या प्रोडक्ट ग्राहकों को कोई फायदा नहीं पहुँचाते । बेचारे ग्राहक इस जाल में फँसकर अपना पैसा बर्बाद करते जाते

हैं । इसके अलावा आज हम देखते हैं कि अखबार में कुछ ऐसे विज्ञापन भी होते हैं जिनके जरिए लोगों से पैसा लूटने की कोशिश करते हैं ।

निष्कर्ष

मीडिया के अंधाधुंध युग में हमारा जीवन भी बिलकुल ऐसा ही हो चुका है । दिखावटी आडंबर से भरपूर पर संस्कृति और संस्कार के नाम पर खोखला । तो बस मनुष्य को यही समझना होगा कि वह विज्ञापनों के मायाजाल में ज्यादा ना पडें । अपने अस्तित्व और आत्मा को शुद्ध रखें, मिलावटी न बनाए । विज्ञापन बस टीवी, रेडियो, अखबार में ही दिखे, वही अच्छा है, इन सब का आडंबर हमारी अंतरात्मा में ना उतरे यही सबसे बेहतर होगा ।

प्रेम विवाह से लाभ और हानि

अन्वीता

द्वितीय बी.कॉम.

प्रस्तावना

प्रेम विवाह वैसे तो दो दिलों का बन्धन होता है, जिससे दो परिवार जुड़ते हैं । अगर वो ही विवाह परिवार के खिलाफ जाकर किया जाये तो ये कई लोगों की जिन्दगी तबाह कर देता है । वह एक ऐसा समय होता है जो कि हर इन्सान के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है । इसमें अगर सही जीवनसाथी मिल जाए तो भविष्य बन सकता है । सही जीवनसाथी न मिलने पर जीवन बिगड़ भी सकता है । इसलिए ज्यादातर लोग सही जीवन साथी के तलाश में प्रेम विवाह का रास्ता अपना लेते हैं । प्रेम विवाह होने के बाद क्या होता है इसके बारे में बतायेंगे ।

प्रेम विवाह के फायदे:

प्रेम विवाह में लोगों की धारणाएँ हैं कि उसमें सिर्फ नुकसान होता है, यह बात गलत है । प्रेम विवाह के यह फायदे हो सकते हैं ।

1. प्रेम विवाह में लोग अपने पसन्द का जीवनसाथी चुक सकते हैं ।

2. वो एक दूसरे के बारे में काफी कुछ जान लेते हैं । जिससे वो अपने जीवनसाथी को खुश रखने के तरीके भी जानते हैं ।
3. प्रेम विवाह में वर-वधु एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकते हैं और उन दोनों में अच्छी पहचान भी होती है ।
4. प्रेम विवाह में अगर संबंध बिगड़ने लगे तो उसका जीवनसाथी उस संबंध को बचाने का प्रयास करता है ।
5. प्रेम विवाह करनेवाले जोड़ों में अपने जीवनसाथी के प्रति सम्मान होता है ।
6. प्रेम विवाह पसन्द का विवाह होता है जिसमें जीवनसाथी एक दूसरे में किसी प्रकार का दोष नहीं ढूँढ़ता है क्योंकि ये लड़का व लड़की दोनों की पसन्द से होने वाला विवाह है ।
7. प्रेम विवाह में पैसों का खर्च बहुत कम होता है ।

प्रेम विवाह से नुकसानः

जहाँ प्रेम विवाह के कुछ फायदें हैं, इससे बहुत से बड़े नुकसान भी हो सकते हैं । जिसकी वजह से लोगों के लिए प्रेम विवाह एक अभिशाप भी हो सकता है ।

1. प्रेम विवाह का सबसे बड़ा नुकसान ये हैं कि अगर किसी भी एक इन्सान का प्रेम से मन भर जाए तो वो ये रिश्ता खत्म भी कर सकता है ।
2. प्रेम विवाह से उस परिवार के सदस्यों से बहुत से दुःख सहने पड़ते हैं । सभी के ताने सुनने पड़ते हैं ।
3. प्रेम विवाह से कई परिवारों की जिन्दगी तबाह हो जाती है । इसके जिम्मेदार सिर्फ वो विवाहित जोड़े होते हैं ।
4. खासकर लड़की जो अन्य धर्मीय से प्रेम विवाह करती है, उस लड़की के पिता व भाई आदि कभी खुश नहीं रह पाते । उनकी जिन्दगी जिन्दा लाश की तरह हो जाती है ।
5. प्रेम विवाह परिवार के खिलाफ करने पर उनके परिवार के सदस्यों द्वारा आत्महत्या भी की जा सकती है क्योंकि वे बदनाम होने से मरना ज्यादा बेहतर समझते हैं ।

6. प्रेम विवाह से परिवार के रिश्ते बिगड़ जाते हैं । इससे वह पुनः किसी भी कीमत पर अपने परिवार के लोगों को नहीं पा सकते । उन्हें अकेले ही रहना पड़ता है ।
7. छोटे-मोटे गलतियों पर भी उनका रिश्ता बिगड़ सकता है क्योंकि उनको समझाने वाला व समर्थन करने वाला परिवार उसके साथ नहीं होता ।
8. प्रेम विवाह से कई दुश्मन हो जाते हैं । इसमें मुख्यतः परिवार के सदस्य भी होते हैं । उन्हें इसमें हमेशा जान का खतरा रहता है ।

निष्कर्ष:

प्रेम विवाह से हज़ारों नुकसान होते हैं । इनके बारे में बताना मुश्किल है । इसलिए हम अगर अपने माता पिता व परिवार को सलामत व खुश देखना चाहते हैं तो उनके इजाज़त के बिना प्रेम विवाह नहीं करनी चाहिए । उनके खिलाफ जाकर विवाह करके उनके उम्मीद को नहीं तोड़ना चाहिए ।

मेरा सपना

डेलिशा लोबो
तृतीय बी.कॉम.

उम्मीदों से खिली आँखों में
भरे हुए हैं सपने
जाने मैं कब खुल कर
करूँगी उनको अपने ।
कब तक इन भारी सपनों को
छुपाए रखेंगी पलके,
जैसे ही टूटकर भिखर गए तो
बनते आँसू हलके ।
देखा था वो सपना जहाँ छू ली थी
आसमान की बुलंदियाँ,
न जाने क्यों पीछे छूट गई मैं
बंधे पैरों में बेडियाँ ।
नई सोच की आँधी लेकर
खड़ी हूँ चट्टान बनकर मैं
अब किसी के रोके भी न रूकने का
मेरा इरादा है ।
गुजारिश बस इतनी सी है
बस वही है मेरा सपना
सिर्फ दुआ ही नहीं पर मदद भी करूँ उनकी
जिनका है अधूरा सपना ।

भारत में सामाजिक मुद्दे

मर्विन नोरोन्हा
प्रथम बी.ए.

भारत एक प्राचीन देश है, कुछ अनुमानों के अनुसार भारतीय सभ्यता लगभग 5 हज़ार वर्ष पुरानी है, इसलिए इसका समाज भी बहुत पुराना और जटिल प्रकृति का है ।

लेकिन यही जटिलता अपने साथ बहुत सी सामाजिक समस्याओं और मुद्दों की जटिल प्रकृति को सामने लाती हैं ।

गरीबी: गरीबी वह स्थिति है जिसमें एक परिवार जीने के लिए अपनी आधारभूत जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होता है; जैसे – खाना, वस्त्र और घर ।

अशिक्षा: अशिक्षा वह स्थिति है जो राष्ट्र के विकास पर एक धब्बा बन गयी है । भारत में बहुत बड़ी जनसंख्या अशिक्षित है ।

बाल विवाह: संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत बाल विवाह की दूसरी बड़ी संख्या रखता है । शादी को दो परिपक्व (बालिग) व्यक्तियों की आपसी सहमती से बना पवित्र मिलन माना जाता है । वे जीवनभर के लिए एक-दूसरे की सभी जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के लिए तैयार होते हैं ।

हम संसार में अपने देश को आधुनिक, आगे बढ़ते हुए राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं और ये सत्य है कि भारत दुनिया में, वे आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में प्रोत्साहन और उन्नति के साथ एक राष्ट्र के रूप में प्रगति कर रहा है, लेकिन वैज्ञानिक तक सामाजिक विकास का संबंध है, यह अभी भी दुनिया के सबसे कम रैंक के साथ नीचे स्तर के देशों में से एक है ।

बीता हुआ कल

अनुशा शेट्टी
प्रथम बी.एस्सी.

मानव के जीवन में अनेक घटनाएँ घटती हैं । उनमें से कुछ घटनाएँ प्रसन्नता प्रदान करने वाली होती हैं तो कुछ वेदना पहुँचाने वाली हैं । अतः मानव-जीवन यानि हमारा जीवन सुख-दुःख का मिश्रण है । सबसे पहले मैं अपने यादगार दिन के बारे में बताना चाहती हूँ । जब मैं आठवीं कक्षा में थी, तब मैं एक लड़की से मिली । वह लड़की मेरी सबसे अच्छी दोस्त बन

गई । इसलिए मेरे अतीत का वह शानदार दिन था जिसको मैं भूल नहीं सकता । इस जिन्दगी में सबसे अच्छा दोस्त मिलना मुश्किल है और मुझे वह मिल गई । वह जो मेरी भावनाओं को समझती है और जब मैं दुःखी होता हूँ तब मुझे सांत्वन देती थी और एक बात है वह हमेशा मुझे हर चीज़ में समर्थन देने के लिए होती है। इसलिए मैं तुम जैसी सबसे अच्छी दोस्त होने के लिए बहुत आभारी हूँ और हमेशा मेरे साथ रहने के लिए धन्यवाद । अब मेरी मित्र के साथ रहकर पाँच साल हो गया है और मुझे उम्मीद है कि हम एक साथ आगे बढ़ंगे । मैं आशा करती हूँ कि ईश्वर हमें जीवन का समय आनंद से रखेगा ।

अब मैं अपने बुरे दिन बताने जा रही हूँ । समाचार-पत्रों में प्रतिदिन किसी न किसी दुर्घटना का समाचार प्रकाशित होता ही रहता है । परंतु जब मैं पाँचवीं कक्षा में थी, तब एक दुर्घटना हो गयी थी । जब हमारी बस एक ट्रक से तकरा गई । उस हृदय-विद्रावक घटना के कारण आज भी मेरे सामने साआत प्रकट हो जाता है । मैं स्कूल जानेवाली बस में जा रही थी । तभी एक ट्रक विपरीत दिशा में आकर हमारी बस से टकराया और बच्चों के शोर से सारा वातावरण गूँज उठा । हमारी बस पलटते-पलटते बची । ईश्वर के कृपा से सारे बच्चें बच गए और काफी चोट भी लगी । मुझे भी कई जगह पर चोट लगी फिर हम सबको लोगों ने अस्पताल लेकर चिकित्सा दी । उस सड़क की दुर्घटना को मैं कभी नहीं भूल सकता । उस दुर्घटना को याद करके मैं आज भी सिहर उठता हूँ ।

मेरा बीता हुआ कल से मुझे मालूम हो गया है कि मनुष्य का जीवन अच्छी और बुरी यादों से भरा हुआ है । मैं यह बताकर समाप्त करना चाहती हूँ कि हमें बुरे यादों को भूलकर अच्छे यादों को याद रखकर इस जीवन को आनंद और सुंदर बनाना चाहिए ।

कृषि महोत्सव

कृष्णप्रिया पी.

प्रथम बी.एस्सी.

भारत में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने वाले त्योहारों पर नज़र डाले तो ऐसे ज्यादातर त्योहार फसल कटाई के बाद ही पड़ता है ।

मकर संक्रांति, लोहडी, पोंगल और भोगाली बिहू, देश के विभिन्न राज्यों में इन त्योहारों को मनाने के पीछे का उद्देश्य सूर्य देवता का आभार प्रकट करना है, क्योंकि फसलों के पकने में सूर्य की भूमिका अहग होती है ।

लोहडी पौष माह के अंतिम दिन, सूर्यास्त के बाद माघ संक्रांति से पहली रात मनाया जाता है । यह प्रायः 12 या 13 जनवरी को पड़ता है । लोहडी के आस-पास ही 14 या 15 जनवरी को भारत के कई राज्यों में मकर संक्रांति या खिचड़ी और तमिलनाडु में पोंगल मनाया जाता है ।

इन त्योहारों का केवल कृषि और धार्मिक महत्व ही नहीं है, बल्कि इनका संबंध स्वास्थ्य से भी जुड़ा है । ये त्योहार हमारे शरीर में से अस्वस्थ पदार्थों को खत्म कर, एक नई स्फूर्ति प्रदान करने में सहायता होते हैं, जो शरीर, मन और आत्मा को ताजगी प्रदान करता है ।

इन त्योहारों में कई विशेष व्यंजन बनाए जाने का रिवाज है । मसलन, उत्तर भारत में गुड, तिल और चिवडा से पारंपरिक व्यंजन बनाए जाते हैं । इस दिन दही और खिचडी (नए चावल से तैयार) खाने की भी परंपरा है । जिन चावलों से खिचडी तैयार की जाती है वह विशेषकर लंबे होते हैं, क्योंकि ऐसे चावलों में पौष्टिक तत्व अधिक मात्रा में होते हैं ।

हाल के अध्ययनों में पाया गया है कि सूक्ष्म सफेद चावल, पाचन की तुलना में लंबे सफेद चावल, पाचन की दृष्टि से अच्छे होते हैं ।

देश के विभिन्न राज्यों में खिचडी बनाने के तरीके अलग-अलग है । इसमें कई तरह की दालों का इस्तेमाल किया जाता है । खिचडी पकने में आसान और प्रोटीन से भरपूर होती है ।

वही लोहडी की बात करें तो यह त्योहार मध्य जनवरी में पड़ता है । ऐसा माना जाता है कि इस पूर्व के दौरान सूर्यदेव मकर राशी से गुजरकर उत्तर की ओर रुख करते हैं । इस पर्व पर संचित सामग्री से चौराहे या मोहल्ले के किसी खुले स्थान पर आग जलाई जाती है और फिर अग्नि की परिक्रमा की जाती है । रेवडी, मक्की के भूने दाने, गुड और सूखे मेवे अग्नि के भेंट किए जाते हैं और ये ही चीज़े प्रसाद के रूप में सभी उपस्थित लोगों को बंटी जाती है ।

सर्दियों के मौसम में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रसाद में दी गई इन चीज़ों का विशेष महत्व है । सूखे मेवे, मक्की के भुने दाने शरीर में ऊर्जा का संचार करने में

सहायक होते हैं । वहीं गुड में लोह पदार्थ पाए जाते हैं, जो कड़कड़ाती ठंड से हमारे शरीर का बचाव करने में सक्षम है ।

ऐसे ही भारत में कई त्योहार है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपने अस्तित्व के होने का प्रमाण देते हैं ।

प्यार

फातिमत सितारा
प्रथम बी.ए.

मेरा मानना है कि प्यार एक 'इमोशन' है । एक ऐसा इमोशन जिसमें अफेक्शन, रेस्पेक्ट और केर हो । आजकल प्यार को लोग कुछ और ही तरीक एसे समझ रहे हैं । लोगों का एक्स्पेक्टेशन बड़ गया है । मेरा कहना है कि लोगों ने प्यार पर बहुत रूल्स लगाये हैं । उदाहरण के लिए – हाथ पकड़ कर जाना, फोन पर दिन-रात बातें करना, हमेशा आई लव यू कहना वगैरा वगैरा । प्यार में स्वातंत्रता होनी चाहिए चाहे वह सोच में, बातों में या कार्य में हो । अक्सर लोग प्यार के लिए बदल जाते हैं । यह गलत है क्योंकि खुद को बदलने से कोई खुश नहीं रहता है । प्यार करने से खुशी मिलना चाहिए । अगर वो नहीं मिले तो प्यार करना व्यर्थ है ।

युवजन प्यार करना सिर्फ 'ट्रेंड' नहीं बल्कि एक जरूरत मान चुके हैं । बच्चे इसे फैशन मानते हैं । मेरा वैयक्तिक मानना है कि टीन एज का प्यार कामयाब नहीं होता है । क्योंकि वह एक ऐसी उम्र है सिर्फ खुदको पहचानते हैं । जब इस उम्र में प्यार करें तो हम हमारा रास्ता भूल जाते हैं । मतलब We forget what we want and start thinking of the person we love और उसका choice हमारा choice बन जाता है । हम सब कुछ उसके लिए बदलने को तैयार होने लगते हैं । ये सब हमें दुःखी बना देते हैं । इस कारण से हम जिससे प्यार करते हैं उसको भी दुःखी करते हैं । इसीलिए मेरा मानना है कि जो खुद को संभाल सकता है (जो अपने आपको प्यार, रेस्पेक्ट, अंडरस्टेंडिंग करते हो) वही प्यार करने लाय है । अगर वो खुदको सँभालना जानता है तो दूसरों को सँभालना उसे बड़ी बात नहीं है ।

बलात्कार

स्वाती हीरेमठ

प्रथम बी.वोक.

आखिर किस बात का है बलात्कारियों को अहंकार,
आखिर किस ने दिया इन्हें यह करने का अधिकार,
न्याय के नाम पर हम सभी मचा तो देते हैं हाहाकार,
एक नीच बलात्कारी बना देता है मासूम के जीवन को अंधकार ।

इन नीच बलात्कारियों को अपने करतूतों का गम नहीं,
आखिर क्यों इन बलात्कारियों को मरण दंड नहीं,
इन मासूमों के परिवार को यह गम, किसी मौत से कम नहीं,
और अगर जिन्दा रह गए तो इन मासूमों की इस समाज में मर्यादा नहीं ।
आखिर कब तक लड़कियाँ घरों में कैद रहेंगी डर से,
इन बलात्कारियों की वजह से बंद हो गया है मासूम लड़कियों का निकलना घर से ।
आखिर इन मासूमों के भी ख्वाब थे ऊंचे आसमानों पर उड़ना अपने आज़ाद पर से ।

गलती इन मासूमों के बहकावे की नहीं,
गलती इन मासूमों के रहन सहन की नहीं,
गलती इन मासूमों के आज़ादी की नहीं,
गलती इन हृदयहीन बलात्कारियों की गंदी सोच और नज़रों की है

भारत में पंथ-निरपेक्षता

विशाखा

प्रथम बी.ए.

यह शब्द पंथ-निरपेक्षता या धर्म निरपेक्षता होती क्या है ? इसका अर्थ यह है कि सरकारी नीति के सामने सारे धर्म के लोग एक समान हैं । भारत के संविधान के उद्देशिका में इसका उल्लेख किया गया है । संविधान के अनुच्छेद 35 से 28 तक इसी विषय के बारे में बताता है ।

हम भारतवासी बहुत गर्व से यह कहते फिरते हैं कि हम उस देश के नागरिक हैं जहाँ सारे धर्म, जाति आदि के लोग मिलजुलकर एक साथ रहते हैं । हम यह कहते हैं कि हम सारे धर्मों के प्रति बहुत 'सहिष्णु' हैं । शायद एक काल में यह बात सच भी रही होगी । पर क्या आज के दिन में भी यह हमारी 'सहनशीलता' बाकी रह गयी है या खत्म हो गई ,है ? क्या आज भी सारे धर्म के लोग एक-जुठ होकर रह रहे हैं ? पूरे देश-विदेश में भारत अपनी 'पंथ-निरपेक्षता' के लिए विख्यात रहा है । परंतु आजकल हमारी यह भारत-माँ गलत कार्यों के लिए बदनाम है । पूरी दुनिया भारत में धर्म के आधार पर चल रहे दंगे-फसादों के बारे में बात कर रही है । कहाँ गया हम सबका भाईचारा, आपसी प्रेम ? आजकल के नौ-जवान पढ़े-लिखे होकर भी ऐसी गंदे कार्यों में लग गए हैं । बस अपने-अपने धर्म को ऊँचा दिखाना चाहते हैं ।

प्राथमिक शिक्षा में हम सबको सिखाया जाता था कि सबका धर्म एक होता है और एक ही परमात्मा होता है । पर जैसे-जैसे हम बढ़ने लगते हैं, वह मूल बात हम सब भूल जाते हैं कि मानवता से बढ़कर और कुछ नहीं है । यह बहुत दुःख की बात है कि धर्म, जात के नाम पर हम आजके इस युग में भी झगड़ा कर रहे हैं । यह इक्कीसवीं सदी है, यहाँ एक तरफ टेकनॉलजी इतनी तरक्की कर रही है, और एक तरफ हम मनुष्य जानवरों जैसी लड़ाई कर रहे हैं, वो भी धर्म-जात के नाम पर । समय आ गया है कि हम इन सब बे-मतलब के बातों पर अपना समय व्यर्थ ना करें, बल्कि भरोसा, प्यार और मानवता की भावना बढ़ाने में अपना समय का सदुपयोग करे और अपने देश को प्यार, भरोसा और मानवता की भावना से रोशन करें । यह 'पंथ-निरपेक्षता' जो हमारे संविधान के उद्देशिका में उल्लेख किया गया है, उसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए । इस महत्वपूर्ण अहम हिस्से को अपना लेना चाहिए ।

OUR SPONSORS

VARUN SHETTY (LAKSHMISHYAM DEVELOPERS, UDUPI)
IVAN & FAMILY
LIBNY KARUNYA
PULSE SUPER MARKET
H.H COMPANY
LENORE LUIS (ROCKSIDE RESTAURANT, KARKALA)
PRATHIKSHA
MOHAMMED MUBEEN
SONAL DAFNY D'ALMEIDA

गतवर्ष के हिंदी संघ के सचिव

मोहम्मद मुनीज़

टिन्कु कुंवर

प्रेरणा २०१९

संघ की गतिविधियाँ

कार्पोरेशन बैंक Corporation Bank

सार्वजनिक क्षेत्र का अग्रणी बैंक

A Premier Public Sector Bank

चैन से रहें गर्व से चलें
LIVE IN PEACE DRIVE WITH PRIDE

कार्प वेहिकल | वाहन के क्रय हेतु ऋण

कार्प होम | आवासीय ऋण

Corp VEHICLE | Loan for purchase of Vehicles

Corp HOME | Housing Loan

आकर्षक ब्याज दर
Attractive Interest Rates

तुरंत मंजूरी
Speedy Approval

सरल कागज़ी कार्यवाही
Simple Documentation

अधिक जानकारी के लिए कृपया शाखा प्रबंधक से संपर्क करें अथवा हमारे बैंक की वेबसाइट www.corpbank.com देखें

For more details please contact Branch Manager or Visit our Bank's website: www.corpbank.com